RCSCE राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद
स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

Room to Read®

गपशप
वर्ष 2020, ई गपशप, अंक 2, कक्षा 6–12 की बालिकाओं के लिए

परियोजना विजयी, राजस्थान

बच्चों के नाम संदेश

प्यारे बच्चों,

आप सभी को मेरा प्यार। बच्चों, मैं आशा करती हूँ कि आप और आपके परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ व सकुशल होंगे।

मैं रूम टू रीड की ई–गपशप पत्रिका के माध्यम से आपसे संवाद करना चाहती हूँ।

आप जानते हैं कि दुनिया में कोविड–19 महामारी आई हुई है। यह वक़्त बेहद कठिन है मगर इस कठिन वक़्त का हमें हिम्मत और हमारी सूझ–बूझ के साथ मुकाबला करना है। मैं चाहती हूँ कि प्रशासन द्वारा जारी किए गए नियम और निर्देशों का आप सभी पालन करें। बहुत ज़रूरी न हो तो घर के बाहर नहीं निकले, अगर घर से बाहर निकलना भी हो तो मास्क अवश्य लगाएँ। किसी भी अनजान चीज/सतह को छूने या लोगों के सम्पर्क में आने पर अपने हाथ सेनिटाइजर या साबुन से धो कर साफ करें। लोगों से कम से कम एक मीटर की दूरी बनाए रखें।

घर पर रहना भी आप सभी के लिए बेहद मुश्किल काम होगा लेकिन कुछ दिन और घर पर रहने से हम खुद को और दूसरे लोगों को इस महामारी से बचा सकते हैं।

आपको अगर कोई बात परेशान या चिंतित करे तो आप अपने दोस्तों, परिवार, या अपने शिक्षकों को फोन करके या सोशल मीडिया के माध्यम से जरूर साझा करें। शिक्षकों से भी मैं अनुरोध करती हूँ कि आप बच्चों की बातों को गौर से सुनें, उन्हें प्यार से समझा कर उनका हौसला बढ़ाएँ। कोरोना का यह दौर खत्म होने तक आप स्माइल लिंक, शिक्षावाणी व शिक्षादर्शन व ई–गपशप के माध्यम से शिक्षा से जुड़े रहें।

आप सभी स्वस्थ रहें, स्वंय का व अपने आसपास के सभी लोगों का ध्यान रखें। इस महामारी को हम एक–दूसरे का सहयोग कर हरा सकते हैं। **आप सभी जानते हैं स्कूलों व हॉस्टलों में नामांकन शुरू हो चुका तो आप अपने अभिभावकों की मदद से तुरंत स्कूल/हॉस्टल में पुनः प्रवेश लें।** मैं उम्मीद करती हूँ कि जल्दी ही फिर से सभी स्कूल व हॉस्टल खुलेंगे और आप पढ़ने के लिए आएँगे। आप सभी का हौसला सराहनीय है। मैं आप सभी के अच्छे स्वास्थ्य और खुशियों की कामना करती हूँ।

आपकी साथी,
डॉ. रश्मि शर्मा
अति. राज्य परियोजना निदेशक, स्कूल शिक्षा, शिक्षा संकुल, जयपुर

मेरी प्यारी सहेलियों

मेरी प्यारी सहेलियों,

आशा है तुम सब अच्छी होंगी और आप सभी घर पर रहकर ही शिक्षादर्शन, शिक्षावाणी व स्माइल कार्यक्रम से जुड़कर पढ़ाई कर रही होंगी। मैं जानती हूँ कि तुम सबके मन में यह जिज्ञासा होगी कि इस दौरान घर रहकर किस किसने क्या कुछ नया सीखा। मैंने सच कहा ना, अगर तुमने कोई नया हुनर सीखा है तो मेरे साथ भी ज़रूर साझा करना।

जानती हो, दुनिया की सबसे कम उम्र वाली नोबेल विजेती कौन है ? उस लड़की के नाम पर जुलाई माह में एक दिवस भी मनाया जाता है। उस बहादुर लड़की का नाम है मलाला युसुफजई। पता है, आतंकवादियों से लड़ने लिए उसने कोई लाठी नहीं उठाई बल्कि शिक्षा को ही अपना हथियार बनाया। उनकी धमकियों से ना वो डरी ना सहमी, उसने सभी महिलाओं और बच्चियों को शिक्षा दिलाने के लिए अपनी जंग और मुहीम को जारी रखा।

साथ ही मैं तुम्हें बताऊँगी कि हमें किसी भी मुसीबत का सामना बिना डर के कैसे करना चाहिए। अगर कुछ गलत होता है तो उसके ख़िलाफ अपनी आवाज़ उठानी चाहिए और उस का डट के सामना करना चाहिए। यह संभव है कि थोड़ा डर लगे लेकिन बहादुरी उस स्थिति से बाहर निकलने में है। इस बार बहुत मज़ा आने वाला है। पढ़ो–पढ़ो आगे बढ़ो।

अगर तुम्हारे मन में कुछ सवाल हों तो मुझे चिट्ठी लिखकर बताना। मुझे बहुत खुशी होगी।

तुम्हारी अपनी
बुलबुली

हौसलों की उड़ान

मेरी सखियों यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जिसने अपने बुलंद हौसलों और साहस का परिचय दिया और समस्त भारतवासियों का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया। चलो दोस्तों हम जानते हैं सुपर गर्ल बछेंद्री पाल के बारे में कि कैसे उसने लगन और निश्चय से अपने सपने को साकार किया।

उत्तराखंड के नकुरी गाँव में जन्मी बछेंद्री पाल को बचपन से ही पर्वत बहुत आकर्षित करते थे। वह रोज़ पर्वतों को अपने स्कूल की खिड़की से निहारती थी। जब वह कॉलेज की पढ़ाई कर रही थी तब उसके मन में पर्वत राज हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने की इच्छा जागी।

उसने अपने इस सपने को पूरा करने के लिए नेहरू पर्वतारोहण संस्थान से प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। उसने बड़ी मेहनत और लगन से पर्वतारोहण की सभी कलाएँ सीखीं। उसने पर्वतारोहण संस्थान द्वारा आयोजित प्री एवरेस्ट ट्रेनिंग कैंप में भी भाग लिया।

यह अभियान बहुत जोखिम भरा था। अभियान में बछेंद्री पाल को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

अंतिम चढ़ाई के दौरान उन्हें 6:30 घंटे तक लगातार चढ़ाई करनी पड़ी। इनकी कठिनाई तब और बढ़ गई जब इनकी एक साथी के पाँव में चोट लग गई। उनकी गति धीमी हो गई थी। फिर भी हर कठिनाई का साहस और धैर्य से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ती रही।

अंत में 23 मई सन 1984 को दोपहर 1 बजकर 07 मिनट पर बछेंद्री पाल ने एवरेस्ट शिखर पर तिरंगा लहरा ही दिया। वह ऐतिहासिक दिन आ गया जिसका सपना बछेंद्री पाल ने बचपन से देखा था। वह विश्व के सर्वोत्तम शिखर को जीतने वाली सबसे पहली पर्वतारोही भारतीय महिला बन गई। संपूर्ण भारत एवं महिलाओं के लिए यह गौरव और सम्मान का बड़ा दिन था।

उसने मन में एक सपना पाला, उसके लिए प्लान बनाया, मेहनत की और उसे पा लिया। उसी के साथ हमारी सुपर गर्ल –बछेंद्री पाल बहुत से लोगों के लिए उदाहरण बनी।

एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब बछेंद्री पाल से यह पूछा गया कि – एवरेस्ट पर पहुँचकर आपको कैसा लगा ? तो उन्होंने उत्तर दिया – मुझे लगा कि मेरा सपना साकार हो गया।

चुप न रहें, ज़रूर कहें।

हिम्मत और साहस की परीक्षा

अनिता और सुनिता एक ही कक्षा में पढ़ती थीं। दोनों के बीच गहरी दोस्ती थी, और दोनों का घर भी एक ही गाँव में आसपास था। दोनों पक्की सहेली साथ–साथ खूब खेलती और मस्ती करती थीं।

दोनों हमेशा साथ ही स्कूल जाती थीं। उनके स्कूल के रास्ते में एक नदी पड़ती थी। एक दिन की बात है स्कूल की छुट्टी के बाद सभी बच्चे घर जा रहे थे। जब सब नदी के पास पहुँचे तो सुनिता नदी के एकदम पास चली गई।

उस समय बरसात की वजह से नदी में पानी पूरा भरा हुआ था। सुनिता अचानक नदी में फिसल गई और नदी के बहाव में बहने लगी। वह ज़ोर ज़ोर से बचाओ–बचाओ चिल्लाने लगी। लेकिन वहाँ बच्चों के अलावा कोई नहीं था जो सुनिता को नदी में डूबने से बचा पाता।

अनिता ने अपने दिमाग से काम लिया और मदद के लिए इधर–उधर देखा। उसे पास ही कुछ बाँस दिखाई दिए। अनिता फुर्ती से सूखे बाँसों को नदी में फेंकने लगी। एक साथ कई बाँस नदी में तैरने लगे। फिर उसने एक बाँस को मज़बूती से पकड कर सुनिता की तरफ किया और चिल्लाई – बाँस को कस के पकड़ो सुनिता। नदी का बहाव तेज था पर सुनिता ने किसी तरह बाँस को पकड़ लिया।

फिर क्या था अनिता अपनी पूरी ताकत लगाकर खींचने लगी और धीरे–धीरे सुनिता उस बाँस के सहारे नदी से किनारे की तरफ आ गई। अनिता ने अपनी सहेली को डूबने से बचा लिया। इतनी देर में बच्चों ने गाँव वालों को भी बुला लिया था। सबने अनिता की बहादुरी की खूब तारीफ की।

सहेलियों इस छोटी सी कहानी से हमें यह पता चलता है कि हमारी जिन्दगी में अनेक बार, ऐसे पल आते हैं जिनमें हमारी हिम्मत और साहस की परीक्षा होती है। अक्सर इन स्थितियों में हम सब हिम्मत हार जाते हैं। लेकिन जो इन्सान साहसी होते हैं उन पर चाहे कितनी भी बड़ी मुसीबतें क्यों न आ जाएँ वे अपनी हिम्मत नहीं हारते हैं और उन परिस्थितियों का सामना बड़े धैर्य और बहादुरी के साथ करते हैं। हमें अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए और अपने दिमाग से काम लेना चाहिए। हिम्मत और मेहनत के बल पर बिगड़े हुए काम भी बन सकते हैं। मुसीबत में कभी भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और परिस्थितियों का डटकर सामना करना चाहिए।

कौन है सुपर गर्ल?

तुम हो सुपर गर्ल ! अब तुम सोच रही होगी कि तुम तो एक स्कूल जाने वाली, अपनी सहेलियों के साथ खेलने वाली और अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहने वाली लड़की हो। तुम भला सुपर गर्ल कैसे हो सकती हो ! सच तो ये है कि हम सभी के अंदर सुपर गर्ल बनने के सारे गुण होते हैं। ज़रुरत है तो सिर्फ उन्हें पहचानने और जीवन में अपनाने की। जब हम अपने किसी साथी की मदद करती हैं, अपने आस पास हो रहे किसी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हैं या अपनी किसी गलती को बहादुरी के साथ स्वीकार करके उसे ठीक करती हैं। तब हम ही होती हैं– वो सुपर गर्ल। सुपर गर्ल होती है साहसी, मेहनती, विनम्र और दयालु।

अपने अंदर की सुपर गर्ल को पहचानो और उसे गर्व से दुनिया के सामने लाओ।

दौड़–परी के साथ मुलाकात

असम की 18 वर्षीय एथलीट हिमा दास ने आईएएएफ विश्व अंडर–20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप की 400 मीटर स्प्रिंट स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है।

हिमा को इस उपलब्धि के लिए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, से लेकर फिल्मी जगत के बड़े–बड़े सितारों तक ने बधाई दी। हिमा दास दौड़ प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट बन गई है।

मैं भी गपशप की तरफ से उनको बधाई देने पहुँच गई। दौड़–परी हिमा के साथ हुई बातचीत को मैं आप लोगों के साथ साझा करती हूँ।

बुलबुली – नमस्कार हिमा, मेरा नाम बुलबुली है, गपशप की तरफ से आपको स्वर्ण पदक जीतने की बहुत–बहुत बधाई।

हिमा – धन्यवाद बुलबुली। मैंने यह जगह हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की है। मेरी यात्रा अभी शुरू ही हुई है। तय करने के लिए मेरे पास एक लंबा रास्ता है।

बुलबुली – हम सब आपके बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं।

हिमा – असम के नगांव जिले के एक छोटे से गाँव धींग में मेरा जन्म हुआ था। मैं अपने पाँच भाई–बहनों में सबसे छोटी हूँ। मेरे पिता एक किसान हैं और मेरी माँ एक घरेलू महिला हैं।

बुलबुली – हमने सुना है कि आप फुटबॉल भी खेलती हैं ?

हिमा – मेरा खेलों से जुड़ाव शुरू से ही रहा है। मैं अपने गाँव के स्कूल के मैदान पर फुटबॉल खेलती थी। थोड़ी बड़ी हुई, तो मैंने कुछ स्थानीय क्लबों के लिए भी फुटबॉल खेला और वहीं पहली बार देश के लिए खेलने का भी सपना देखा।

बुलबुली – फुटबॉल खेलते–खेलते आप एथलेटिक्स में कब और कैसे आ गईं ?

हिमा – दो साल पहले ही मैंने अपने शारीरिक शिक्षा अध्यापक की सलाह पर फुटबॉल को अलविदा कहकर एथलेटिक्स की व्यक्तिगत स्पर्धा में हाथ आजमाना शुरू किया। महीनों तक अभ्यास करने के बाद मैंने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता की सौ मीटर स्पर्धा में न सिर्फ भाग लिया, बल्कि काँस्य पदक भी जीता।

बुलबुली – आपको कब लगा कि एथलेटिक्स में आप नाम कमा सकती हैं ?

हिमा – जब मुझे जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए कोयंबटूर भेजा गया, तो मुझे जानने वाला कोई नहीं था। वहाँ मैंने फाइनल में जगह बनाई। जब मैं वापस घर लौटी तो मेरी दुनिया बदल चुकी थी। बेहतर ट्रेनिंग के लिए मेरे कोच निपॉन दास मुझे गुवाहाटी ले आए।

आप खाली वक्त में क्या करती हैं ?

बुलबुली – जब भी मुझे खाली समय मिलता है तो मैं प्रसिद्ध असमिया गायक जुबिन गर्ग को सुनना पसंद करती हूँ और उन्होंने मुझे काफी प्रेरित भी किया है।

हिमा – हमारे पाठकों के लिए कोई संदेश देना चाहेंगी ?

बुलबुली – दो साल पहले तक एथलेटिक्स से कोई वास्ता न रखने के बावजूद मैंने गोल्ड मेडल जीता। किसे पता था कि देश के लिए खेलने का मेरा सपना, फुटबॉल में नहीं, बल्कि किसी दूसरे खेल के माध्यम से पूरा होगा। इसलिए आपको उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए, आज नहीं तो कल, आपका वक्त जरूर आएगा।

हिमा – सहेलियों, हिमा सामाजिक रूप से भी बेहद जागरूक हैं। इन्होंने अपने गाँव को शराब मुक्त कराने के लिए अभियान चलाया और अपने गाँव धींग को शराब मुक्त करवाया। इसी वजह से इन्हें सब धींग एक्सप्रेस कहकर बुलाते हैं।

हिमा दास के साक्षात्कार से प्रेरित।

बच्चों की गपशप व रचनाएँ

गपशप का यह पन्ना आपकी रचनाओं के लिए है। हमें आपकी नई रचनाओं का इंतज़ार रहेगा !

होस्टल के दिन...

क्या दिन थे वो होस्टल के
जब कभी रोना आया तो दोस्तों ने हँसाया
जब मदद मांगी तो सबने हाथ बढ़ाया
पर कमबख्त जब हँसाया तो बिछड़ जाने पर
वापिस रुलाया !
जब गए होस्टल तो माँ की याद से रोना आया
फ़िर अच्छे प्यारे दोस्त बनाकर
सब के साथ मिलकर एक नया परिवार बनाया !
कुछ भी हो पर याद आते हैं वो दोस्त जिन्होंने मुझे
अपना बनाया !

ऊषा चारण, कक्षा 11वी.
के.जी.बी.वी., मौलासर, नागौर

माँ

माँ धड़कती है दिल में धड़कन बनके,
माँ महकती है साँसों में खुशबु बनके !
माँ बस्ती है आँखों में रौशनी बनके,
माँ बचाती है मुश्किलों से साया बनके !
माँ बहती है धमनियों में रक्त बनके,
माँ धड़कती है दिल में धड़कन बनके !

भती पंवार, कक्षा 11वी.
के.जी.बी.वी. रुण, मुंडवा, नागौर

माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी

क्यों अन्न उगे हैं मिट्टी में
क्यों स्वाद है लिट्टी चौखे में
सब तुमको बतलाऊँगी
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी।
बापू की दवा का पर्चा है
फसल में कितना खर्चा है
सब तुम को समझाऊँगी
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी।
क्यों औरत पर्दा करती है
क्यों वो दहेज़ केख़ातिर वो जलती है
क्यों सारे जुल्म वो सहती है
यह सब बंद करने के ख़ातिर मैं अपनी आवाज उठाऊँगी
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी।
हम गरीब हैं पर क्यों हैं
फसल हमारी उनकी क्यों हैं
झौपड़ी हमारी गिरवी क्यों है
इस चक्कर को सुलझाऊँगी
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी।

शमीना, कक्षा 10वी.
राज. बा. माध्य. विद्यालय, गगवाना, अजमेर

बेटी को पढ़ने दो

बेटी को पढ़ने दो, उसे खुला आसमान दो
बेटी की हर सुबह को उमंग से भरने दो, उसे
नए और स्वतंत्र विचार गढ़ने दो
नवभारत का निर्माण करने दो, उसे खुशियों से
भरा जीवन दो
बेटी को पढ़ने दो !

पारस, कक्षा 11वी.
के.जी.बी.वी., उपली ओडन (खेमनोर), राजसमन्द

रिंकू सैनी, 9 रजवास शेरसिंह दौसा

टीचर व वार्डन दीदी के साथ करें।

यहाँ दी गई तस्वीरों को पहचानो।
ये सब सुपर गर्ल हैं।
अब यह पता लगाओ कि इनके नाम क्या हैं ?
किस क्षेत्र में इन्होंने गौरव हासिल किया है ?

तुम चाहो तो अपनी टीचर/वार्डन दीदी और अपने बड़े भाई-बहनों की मदद ले सकती हो।

प्रकाशक: राजस्थान राज्य कार्यालय, सी–388, सेतुपथ, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर–302017
सर्वाधिकार सुरक्षित: रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट